एक शांत संवाद

लेख

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश सेन्टर सनाईया क़दीम

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश
कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब
islamhouse.com
1430 .2009

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد للّه، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ باللّه من شرور أنفسنا وسيئات أعمالنا، من يهده اللّه فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا اللّه وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده و رسوله صلى اللّه عليه وعلى آله وصحبه وسلم.

أما بعد:

नीचे की यह बात–चीत ऐसे दो व्यक्तियों के बीच हुई है जिन में से एक का नाम अब्दुल्लाह और दूसरे का नाम अब्दुन्नबी है, अब्दुल्लाह की भेंट जब पहली बार अब्दुन्नबी से हुई तो इस नाम से उसे कुछ अचंभा सा हुवा, और वह अपने दिल में सोचने लगा कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोई

अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करे, चुनाँचे वह अब्दुन्नबी से इस प्रकार सम्बोधित हुआ :

अब्दुल्लाह : क्या आप अल्लाह के सिवाय किसी और की पूजा करते है?!

अब्दुन्नबी : नहीं, मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी की भी इबादत नहीं करता, मैं मुसलमान हूँ और केवल अल्लाह की इबादत करता हूँ।

अब्दुल्लाह : फिर आप का यह कैसा नाम है? यह तो ऐसे ही है जैसे ईसाई अपना नाम अब्दुल्मसीह रखते हैं, और इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं; क्योंकि वे ईसा अलैहिस्सलाम की पूजा करते हैं। आप का यह नाम जो भी सुनेगा उसके दिमाग़ में यही बात आएगी कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूजा करत हैं, हालांकि मुसलमान का अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे ऐसा अक़ीदा नहीं है, बल्कि उसके ऊपर अनिवार्य है कि वह यह अक़ीदा रखे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्व श्रेष्ठ मनुष्य और सामस्त पैग़म्बरों के सरदार हैं, हम अपना यह नाम तबर्रुक के लिए रखते हैं, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मर्यादे और अल्लाह के पास आप को जो पद और रुतबा प्राप्त है उसके द्वारा अल्लाह की नज़दीकी चाहते हैं, तथा इसी कारणवश हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से चफ़ाअत तलब करते हैं। और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, मेरे भाई का नाम अब्दुल्–हुसैन है, और इस से पहले मेरे पिता का नाम अब्दुर्रसूल है, इस तरह के नाम रखना पुरानी रीति है और लोगों में प्रचलित है, हम ने अपने बाप–दादा को इसी तरीक़े पर पाया है, इसलिए आप इस मस्अले में सख़्ती से काम न लें, क्योंकि यह एक साधरण मामला है और धर्म आसानी पर आधारित है।

अब्दुल्लाह : यह तो पहले से भी अधिक भयानक और भयंकर ग़लती है कि आप ग़ैरुल्लाह से ऐसी चीज़ मांगें जिसे देने पर अल्लाह के

सिवाय कोई दूसरा शक्ति नहीं रखता, चाहे जिससे यह चीज़ मांगी गई है वह स्वयं पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हों, या उनसे कम दर्जे का बुजुर्ग या वली, जैसे हुसैन, या कोई और ही क्यों न हो। यह बात उस तौहीद के खिलाफ़ है जिसका हमें हुक्म दिया गया है तथा कल्मा “ لا إله إلا الله” के अर्थ के विरुद्ध है।

मैं आप से कुछ प्रश्न करूँगा ताकि आप पर इस मामले का भयानकपन और इस तरह के नाम रखने के बुरे परिणाम स्पष्ट होजाएं, इससे मेरा उद्देश्य मात्र सत्य की पैरवी और उसका इत्तिबा’अ् है, असत्य की स्पष्टता और उससे दूरी है, और भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है, इसके सिवाय मेरा कोई और मक्सद नहीं। हम अल्लाह तआला ही से मदद मांगते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं, महान और प्रतिभा वाले अल्लाह की तौफीक़ के बिना किसी हानि से बचने और कोई लाभ प्राप्त करने की शक्ति व ताक़त नहीं।

लेकिन इस से पहले मैं आप को अल्लाह तआला का यह फ़रमान याद दिलाता हूँ :

﴿إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ (سورة النور ۵۱:)

''ईमान वालों का कहना यह होता है, जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उसका रसूल उनमें फ़ैसला कर दें तो वे कहते हैं हम ने सुना और मान लिया।'' (सूरतुन्नूर :51)

तथा उसका यह फ़रमान भी याद दिलाता हूँ :

﴿فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ﴾ (سورة النساء: ۵۹)

''फिर यदि तुम किसी चीज़ में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की ओर लौटाओ

यदि तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो।'' (सूरतुन्निसा :59)

अब्दुल्लाह : अभी आप ने कहा है कि आप

अल्लाह को एक मानते और इस बात की गवाही देते हैं कि उसके सिवाय कोई सत्य पूज्य नहीं, तो क्या आप हम से यह स्पष्ट करेंगे कि उसका मतलब क्या है?

अब्दुन्नबी : तौहीद यह है कि आप इस बात

पर ईमान रखें कि अल्लाह आकाश और

धरती का सृष्टा है, वही जीवित रखता है और मृत्यु देता है, वही पृथ्वी का मुदब्बिर और व्यवस्थापक है, और पूरी सृष्टि को वही जीविका प्रदान करता है।

अब्दुल्लाह : यदि यही तौहीद की तारीफ़ है तो

इस तारीफ़ की रू से फ़िरऔन और अबू जहल इत्यादि सभी तौहीद परस्त होंगे; क्योंकि उनमें से कोई भी इन चीज़ों का जिन्हें आप ने अभी ज़िक्र किया है इन्कार नहीं करता था। फ़िरऔन जिसने

अपने रब होने का दावा किया था, वह भी अल्लाह के अस्तित्व को मानता था, और यह भी स्वीकार करता था कि पृथ्वी का व्यवस्थापक अल्लाह ही है। इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا﴾
(سورة النمل: ١٤)

‘‘उन्होंने इसका इन्कार किया हालांकि उनके दिल विश्वास कर चुके थे, केवल जुल्म और घमंड के कारण।’’

इसका यह एतराफ़ उस समय खुल कर सामने आगया जब वह डूबने लगा था।

तौहीद यह नहीं है, बल्कि वास्तव में वह तौहीद जिसके कारण रसूल भेजे गए, किताबें उतारी गईं और कुरैश से लड़ाई की गई वह इबादत और पूजा में अल्लाह को एक मानना है, इबादत एक ऐसा शब्द है जो अपने अर्थ में सारे ज़ाहिरी और बातिनी कथन और कर्म को इकट्ठा किए हुए है जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है और जिन से खुश होता

है। لا إله إلا الله में إله का अर्थ ऐसे पूज्य के है, जिसके सिवाय किसी और की इबादत ठीक नहीं।

अब्दुल्लाह : क्या आपको इसकी जानकारी है कि धरती पर रसूलों को क्यों भेजा गया, जिन में सब से पहले रसूल नूह हैं?

अब्दुन्नबी : हाँ, रसूलों को इसलिए भेजा गया ताकि वे शिर्क करने वालों को मात्र अल्लाह की इबादत करने और गैरुल्लाह (जिन्हें वे अल्लाह की इबादत में साझी बनाते थे उन) की इबादत छोड़ देने की ओर बुलाएं।

अब्दुल्लाह : अच्छा आप यह बता सकते हैं कि नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के शिर्क का कारण क्या था?

अब्दुन्नबी : मैं नहीं जानता कि इसका क्या कारण था।

अब्दुल्लाह : अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को उनके समुदाय की ओर इसलिए भेजा कि उनके समुदाय ने अपने बुज़ुर्ग और नेक व्यक्ति : वद्द, सुवा'अ्, यगूस, यऊक़ और नस्र के बारे में गुलू और सीमा पार किया था।

अब्दुन्नबी : क्या आपकी मुराद यह है कि वद्द, सुवा'अ्, यगूस, यऊक़ और नस्र उनके समुदाय के बुज़ुर्ग और नेक लोगों के नाम हैं, सरकश काफ़िरों के नाम नहीं?

अब्दुल्लाह : हाँ, यह नेक लोगों के नाम हैं जिन्हें क़ौमे–नूह ने पूज्य बना लिया था, और अरब के लोगों ने इसे में उनका अनुसरण किया, इसका प्रमाण वह हदीस है जिस में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्हों ने फरमाया : यह नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के नेक व्यक्ति थे, जब यह मर गए तो शैतान ने इनकी क़ौम के दिलों में यह बात डाल दी कि तुम उनके मूर्ती बनाकर अपनी बैठकों में जिनमें तुम बैठते हो रख लो, और उन मूर्तियों के भी वही नाम रख लो

जो उन नेक व्यक्तियों के थे, तो उन्हों ने ऐसा ही किया, पर उन्हों ने ऐसा उनकी पूजा करने के लिए नहीं किया था, बल्कि मात्र इसलिए किया था कि इससे उनकी याद ताज़ा रहेगी, फिर जब यह लोग मर गए और ज्ञान भुला दिया गया तो उन मूर्तियों की पूजा होने लगी।

अब्दुन्नबी : यह तो अचंभे वाली बात है।

अब्दुल्लाह : क्या मैं इस से भी आश्चर्य–जनक बात न बताऊँ? आप यह भी जान लीजिए कि अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह ने एक ऐसी क़ौम की ओर रसूल बनाकर भेजा, जो इबादत करते थे, हज्ज करते थे, दान–दक्षिना देते थे, लेकिन साथ–साथ अल्लाह की मख़्लूक़ात को अपने और अल्लाह के बीच वसीला और वास्ता बनाते थे, और कहते थे कि हम उनके द्वारा नज़दीकी चाहते हैं, अल्लाह के यहाँ हम फ़रिश्तों की, ईसा अलैहिस्सलाम की, और उनके अलावा दूसरे नेक व्यक्तियों की सिफ़ारिश चाहते हैं, तो अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम को नबी बनाकर भेजा, ताकि आप उनके लिए उनके पिता इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म को दोबारा से जीवित करें, और उन्हें यह बताएं कि इस तरह का तक़र्रुब और आस्था मात्र अल्लाह का हक़ है, इसमें से ग़ैरुल्लाह के लिए कोई भी चीज़ जायज़ नहीं, अल्लाह ही अकेला पैदा करने वाला है, उसमें उसका कोई साझी नहीं, मात्र वही जीविका प्रदान करता है, उसमें भी उसके साथ कोई और शरीक नहीं।

और सातों आकाश और धरती और जो भी इनमें हैं सब उसके बन्दे, सेवक और दास हैं, सारी चीज़ें उसके अधीन हैं और वही उनका उपायकर्ता है, यहाँ तक कि वे सारे पूज्य भी जिन की वे पूजा करते थे वे भी यही स्वीकारते थे कि वे उसी की उपाय के अधीन हैं।

अब्दुन्नबी : यह तो बड़ी महत्व की बात है, इसका कोई प्रमाण भी है?

अब्दुल्लाह : हाँ, बहुत से प्रमाण हैं, उन्हीं में से अल्लाह का यह फ़रमान है :

﴿قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ والأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيَّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللّهُ فَقُلْ أَفَلاَ تَتَّقُونَ﴾ (سورة يونس: ٣١)

‘‘आप कहिए कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी पहुँचाता है? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा अधिकार रखता है? और कौन है जो ज़िन्दा को मरे हुए से निकालता है? और मरे हुए को ज़िन्दा से निकालता है? और कौन है जो सारे कामों की तद्बीर करता है? तो वे ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह। तो उनसे कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?’’ (सूरत यूनुस :31)

और यह भी फ़रमाया :

﴿قُل لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ قُلْ مَن

بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ﴾ (سورة المؤمنون : ٨٤-٨٩)

‘‘पूछिए तो सही कि धरती और उसकी सारी चीज़ें किसकी हैं, बताओ यदि तुम जानते हो? तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि फिर तुम नसीहत क्यों नहीं लेते? पूछिए कि सातों आकाशों का और बड़े अर्श का रब कौन है? वह लोग जवाब देंगे अल्लाह ही है, कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते? पूछिए कि सारी चीज़ों का अधिकार किस के हाथ में है? जो शरण देता और जिसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं दिया जाता यदि तुम जानते हो तो बतलादो? यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो?’’

मुश्रिक़ीन हज्ज के तल्बिया में यह कहते थे :

لَبَّيْكَ اللهم لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ إلاَّ شَرِيْكًا هُوَ لَكَ تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ

हाज़िर हूँ, हे अल्लाह हाज़िर हूँ, तेरा कोई साझी नहीं सिवाय एक साझी के, जो तेरे ही लिए है तू ही उसका मालिक है, और उन चीज़ों का भी जिसका वह मालिक है।

इस इक़्रार ने कि अल्लाह संसार में फेर–बदल करने वाला है कुरैश के मुश्रिकीन को इस्लाम में प्रवेश न करा सका, बल्कि उनके खून और धन को मात्र इस चीज़ ने हलाल कर दिया कि वे अपने लिए फ़रिश्तों, नबियों और वलियों की सिफ़ारिश चाहते थे।

इसलिए हर तरह की दुआ, नज़र और कुर्बानी मात्र अल्लाह के लिए करना और मात्र अल्लाह ही से सहायता चाहना, और प्रत्येक क़िस्म की इबादत को मात्र उसी के लिए ख़ालिस करना ज़रूरी है।

अब्दुन्नबी : "अल्लाह के होने का इक़्रार करना, और इस बात का इक़्रार करना कि वही संसार में फेर–बदल करने वाला है", आपके गुमान के अनुसार यदि यह तौहीद नहीं है, तो फिर तौहीद है क्या?

अब्दुल्लाह : जिस तौहीद के कारण रसूलों को भेजा गया, और जिसका मुश्रिकों ने इन्कार किया, वह तौहीद मात्र एक अल्लाह तआला की इबादत करना है; तो किसी भी तरह की इबादत चाहे वह दुआ हो, या नज़र हो, या ज़ब्ह करना, फ़र्याद करना, और सहायता मांगना वग़ैरह हो अल्लाह के सिवाय दूसरों के लिए नहीं की जासकती। और यही वह तौहीद है जिसका इक़्रार आप لا إله إلا الله के द्वारा करते हैं; क्योंकि कुरैश के मुश्रिकीन के नज़दीक إله वह है जिसका इन इबादतों द्वारा क़स्द किया जाए, चाहे वह फ़रिश्ता हो, या नबी हो, या वली हो, या पेड़ हो, या क़ब्र हो, या जिन्न हो, और उन्होंने إله का अर्थ पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, या बन्दोबस्त करने वाला नहीं समझा, इसलिए कि वह यह जानते थे कि यह सारी चीज़ें मात्र अल्लाह की हैं, जैसा कि पीछे गुज़र चुका। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास कल्मए तौहीद لا إله إلا الله की दावत

देने और उसके अर्थ को अपनी जीवन पर लागू करने के लिए आए थे न कि मात्र इसलिए कि ज़ुबान से इस कल्मे को कह लें।

अब्दुन्नबी : गोया कि आप यह कहना चाहते हैं कि कुरैश के मुश्रिक़ीन لاإلهٰ إلا اللّٰه के अर्थ को हमारे इस ज़माने के बहुत से मुसलमानों से अधिक जानते थे?

अब्दुल्लाह : हाँ, यह दुःख-दायक वास्तविक्ता है, और बड़े अफ़सोस की बात है कि जाहिल काफिर यह जानते थे कि इस कल्मे से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुराद : इबादत को मात्र अल्लाह के लिए ख़ालिस करना है, और अल्लाह के सिवाय जिन जिन चीज़ों की पूजा की जाती है उन सब का इन्कार करना और उनसे अपनी बराअत ज़ाहिर करना है; क्योंकि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे यह कहा कि तुम لاإلهٰ إلا اللّٰه कहो, तो उन्होंने जवाब में कहा :

﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾ (سورة ص ٥)

"क्या इसने इतने सारे मा'बूदों (पूज्यों) का एक ही मा'बूद (पूज्य) कर दिया, वास्तव में यह बहुत ही अजीब बात है।" (सूरत साद :5)

जबकि वह यह ईमान भी रखते थे कि अल्लाह संसार में फेर–बदल करने वाला है, तो तअज्जुब है इस्लाम के उन दावेदारों पर जिन्हें इस कल्मे का उतना भी अर्थ मालूम नहीं जितना कि जाहिल काफ़िरों को था। बल्कि वह समझता हैं कि इन हर्फों को मात्र जुबान से इनके अर्थ का दिल में विश्वास रखे बिना अदा कर लेना ही काफ़ी है, और उनमें जो अपने आप को होश्यार जानते हैं वह इसका अर्थ यह समझते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा पैदा नहीं करता, रोज़ी नहीं देता, और न ही बन्दोबस्त करता है, तो इस्लाम के ऐसे दावेदारों में कोई भलाई नहीं है जिन के मुक़ाबले में जाहिल काफ़िर لا إله إلا الله के अर्थ को अधिक बेहतर जानते हों।

अब्दुन्नबी : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता, मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह ही पैदा करता वही रोज़ी देता वही अकेले लाभ और हानि पहुँचाता इनमें उसका कोई साझी नहीं है, और यह कि स्वयं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपने लिए लाभ और हानि की शक्ति नहीं रखते, और न ही अली रज़ियल्लाहु अन्हु हूसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और अब्दुल् क़ादिर रहिमुल्लाह वग़ैरा, लेकिन मैं पापी हूँ, और इन नेक लोगों का अल्लाह के पास ऊँचा मक़ाम है और उन्हीं के द्वारा मैं अल्लाह के पास उनकी सिफ़ारिश चाहता हूँ।

अब्दुल्लाह : इसके जवाब में मैं आप से वही कहूँगा जो इस से पहले कह चुका हूँ, कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन लोगों से लड़ाई की वे भी इन सारी चीज़ों को मानते थे, और यह भी मानते थे कि उन की मुख़्तयाँ संसार में कोई हेर फेर नहीं करती हैं, वे मात्र उनसे

सिफ़ारिश चाहते थे, जैसा कि हम क़ुर्आनी प्रमाण द्वारा इस से पहले बता चुके हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन वे आयतें तो उनके बारे में उतरी हैं जो मूर्ख़तयों की पूजा करते थे, तो आप नबियों और नेक लोगों को मूर्ख़तयों के जैसे कैसे बना सकते हैं?

अब्दुल्लाह : इस बात पर पहले इत्तिफ़ाक़ होचुका है कि कुछ मूर्ख़तयों के नाम नेक लोगों के नाम पर रखे गए थे, जैसा कि नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुवा, और काफ़िरों ने उनके द्वारा अल्लाह के नज़दीक मात्र सिफ़ारिश ही चाही, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक उनका ऊँचा मक़ाम है, इसके प्रमाण में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَى ﴾ (سورة الزمر: ٣)

और जिन लोगों ने अल्ला के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम उन की इबादत मात्र

इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह से क़रीब करदें।

आप का यह कहना कि तुम वलियों और नबियों को बुत कैसे कह रहे हो? तो हम इस बारे में आप को यह बता देना चाहते हैं कि जिन काफ़िरों के पास अल्लाह के नबी भेजे गए उनमें ऐसे भी लोग थे जो वलियों को पुकारते थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا﴾ (سورة الإسراء: ٥٧)

"जिन्हें यह लोग पुकारते हैं स्वयं वे अपने रब की कुर्बत की तलाश में रहते हैं कि उनमें कोई अधिक क़रीब होजाए, वह स्वयं उसकी रहमत की आशा रखते हैं, और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं।"

और उनमें से कुछ ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी माँ को पूकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَإِذْ قَالَ اللّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَـهَيْنِ مِن دُونِ اللّهِ ﴾ (سورة المائدة: ١١٦)

''और वह समय भी याद करने के क़ाबिल है जबकि अल्लाह फ़रमाए गा कि ऐ ईसा बिन मर्यम क्या तुम ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय मा'बूद (पूज्य) बना लो?''

और इसी तरह उनमें से कुछ फ़रिश्तों को पुकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ﴾ (سورة سبأ: ٤٠)

''और जिस दिन अल्लाह तआला सभों को इकट्ठा करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?''

इन आयतों पर ज़रा ध्यान दीजिए अल्लाह तआला ने उन्हें काफ़िर क़रार दिया जो मूरतयों से मांगते थे, और इसी प्रकार बिना कोई फ़र्क़ किए उन्हें भी काफ़िर क़रार दिया जो नेक लोगों को पुकारा करते थे चाहे वे पुकारे जाने वाले अम्बिया हों, या फ़रिश्ते या औलिया। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी कारण उन से जिहाद किया और इस बारे उनमें फ़र्क़ नहीं किया।

अब्दुन्नबी : लेकिन हमारे और काफ़िरों में तो फ़र्क़ है, काफिर उन्हीं से फ़ाइदा चाहते हैं, जबकि मैं तो यह गवाही देता हूँ कि फ़ाइदा पहुँचाने वाला, नुक्सान पहुँचाने वाला और इन्तिज़ाम करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और हम यह चीज़ें मात्र उसी से चाहते हैं, नेक लोगों को कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है, हम तो उनसे मात्र यह चाहते हैं कि वे हमारे लिए अल्लाह से सिफ़ारिश कर दें।

अब्दुल्लाह : आप की यह बात ठीक काफ़िरों की बात जैसी है, दोनों में कुछ भी फ़र्क़ नहीं है,

दलील के लिए अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ﴾

(سورة يونس: ١٨)

और यह लोग अल्लाह के सिवाय ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुँचा सके और न लाभ, और कहते हैं कि अल्लाह के पास यह हमारे सिफ़ारिशी हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन मैं तो इनकी इबादत नहीं करता हूँ, मैं तो मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ, रहा उनसे फ़र्याद करना और उन्हें पुकारना तो यह इबादत तो नहीं है।

अब्दुल्लाह : मेरा आप से एक प्रश्न है, क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने मात्र अपनी इबादत आप पर फ़र्ज़ की है? और यह उसका आप पर हक़ है जैसा कि उसने फ़रमाया:

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ﴾ (سورة البينة ٥)

“उन्हें इसके सिवाय कोई आदेश नहीं दिया गया कि मात्र अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को ख़ालिस रखें इब्राहीम हनीफ़ के दीन पर।”

अब्दुन्नबी : हाँ, उसने इसे मुझ पर फ़र्ज़ किया है।

अब्दुल्लाह : अल्लाह ने आप पर इख़्लास के साथ जो इबादत फ़र्ज की है उसे आप ज़रा स्पष्ट कर दें।

अब्दुन्नबी : मुझे आप की बात समझ में नहीं आई, फिर से स्पष्ट करें।

अब्दुल्लाह : मैं आप को बताता हूँ ध्यान दे कर सुनें, अल्लाह का फ़रमान है :

﴿ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ﴾ (سورة الأعراف ٥٥)

"तुम लोग अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ा कर भी और चुपके चुपके भी, वह (अल्लाह तआला) अवश्य उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो सीमा पार कर जाएं।"

तो क्या दुआ करना अल्लाह की इबादत है या नहीं?

अब्दुन्नबी : क्यों नहीं, बल्कि यही इबादत का मग़्ज़ है, जैसा कि ह़दीस में आया है :

(الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ) "दुआ ही इबादत है।"

अब्दुल्लाह : जब आप ने यह स्वीकार कर लिया कि दुआ अल्लाह की इबादत है, और किसी ज़रूरत के लिए अल्लाह से डरते हुए और आशा रखते हुए आप ने दिन और रात में उसे ही पुकारा, और उसी ज़रूरत के लिए आप ने नबी, या फ़रिश्ता, या किसी नेक व्यक्ति को पुकारा जो अपनी क़ब्र में है, तो क्या आप ने इस इबादत में शिर्क नहीं किया?

अब्दुन्नबी : हाँ, यह तो मुझ से शिर्क हुवा। आप की यह बात तो बहुत स्पष्ट है।

अब्दुल्लाह : मैं आप को एक दूसरा उदाहरण देता हूँ : जब आप को अल्लाह तआला के इस क़ौल :

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ﴾ (سورة الكوثر: ٢)

“आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और उसी के लिए कुर्बानी किजिए।”

के बारे में जानकारी होगई, और आप ने उस के आदेश का पालन किया और उसी के लिए कुर्बानी की, तो क्या आप की यह ज़बह और कुर्बानी अल्लाह की इबादत मानी जाएगी?

अब्दुन्नबी : हाँ, यह तो इबादत है।

अब्दुल्लाह : तो यदि आपने अल्लाह के साथ किसी मख़्लूक़ के लिए भी ज़बह किया चाहे वह मख़्लूक़ नबी हो, या जिन्न, या कोइ और, तो क्या

आप ने इस इबादत में गैरुल्लाह को साझी नहीं बना लिया?

अब्दुन्नबी : निःसन्देह यह तो शिर्क है।

अब्दुल्लाह : मैं ने मात्र दुआ और ज़बह का उदाहरण दिया है, इसलिए कि जुबानी इबादतों में दुआ और बदनी इबादतों में ज़बह सबसे महत्वपुर्ण हैं, और मात्र इन्हीं दो चीज़ों का नाम इबादत नहीं है बल्कि नज़र, क़सम, पनाह मांगना और सहायता चाहना वग़ैरा भी इबादत हैं, और यह बताएं कि मुश्रिकीन जिनके बारे में कुर्आन उतरा क्या वे फ़रिश्ते, नेक लोगों और लात वग़ैरा की इबादत करते थे?

अब्दुन्नबी : हाँ, वे तो उनकी इबादत किया करते थे।

अब्दुल्लाह : मुश्रिकीन जो उनकी इबादत किया करते थे, यह इबादत तो दुआ, ज़बह, इस्तिआजा (पनाह मांगना), इस्तिआना (मदद चाहना), और इल्तिजा के द्वारा ही तो थी, नहीं तो वे तो यह

स्वीकार कर रहे थे कि वे अल्लाह के दास हैं, उस के अधीन हैं, और वही सारी चीज़ों का बन्दोबस्त करने वाला है, लेकिन सिफ़ारिश और जाह के लिए उन्होंने गैरुल्लाह को पुकारा, और यह चीज़ बिल्कुल स्पष्ट है।

अब्दुन्नबी : अच्छा अब्दुल्लाह साहब हमें यह बताएं कि क्या आप अल्लाह के रसूल की सिफ़ारिश का इन्कार करते और उससे बराअत करते हैं?

अब्दुल्लाह : नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, मैं न तो उसका इन्कार करता और न ही उस से बराअत करता हूँ, बल्कि उन पर मेरे मां बाप कुर्बान हों, वह तो महशर में सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश स्वीकार होगी, और हम उन की सिफ़ारिश की उम्मीद लगाए बैठे हैं, लेकिन शफ़ाअत मात्र अल्लाह के लिए है, जैसा कि उसका फ़रमान है :

﴿قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا﴾ (سورة الزمر: ٤٤)

“कह दीजिए कि शफ़ाअत सभी अल्लाह के लिए है।”

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत उस समय होगी जब अल्लाह इसकी अनुमति देगा, जैसा कि उसने फ़रमाया:

﴿مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ﴾ (البقرة: ٢٥٥)

“कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके?”

किसी के लिए भी उस समय तक शफ़ाअत नहीं की जाएगी जब तक कि अल्लाह उस व्यक्ति के बारे में शफ़ाअत की अनुमति न दे दे, जैसा कि उसने फ़रमाया:

﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى﴾ (الأنبياء: ٢٨)

“वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते मगर जिस से अल्लाह खुश हो।”

और अल्लाह मात्र तौहीद ही से खुश होगा, जैसा कि उसने इर्शाद फ़रमाया:

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلاَمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ (سورة آل عمران: ٨٥)

“और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय कोई और धर्म चाहेगा तो अल्लाह उससे उसे स्वीकार नहीं करेगा, और वह आख़िरत में घाटा पाने वालों में से होगा।”

तो जब सारी की सारी शफ़ाअत का हक़ मात्र अल्लाह ही को है, और मात्र उसकी अनुमति के बाद ही शफ़ाअत की जाएगी, और नबी या कोइ भी किसी के लिए शफ़ाअत उस समय तक नहीं करेंगे जब तक कि उस के लिए शफ़ाअत की अनुमति न दे दीजाए, और अल्लाह तआला मात्र तौहीद परस्तों के लिए ही अनुमति देगा, तो जब यह बात स्पष्ट होगई कि सारी की सारी शफ़ाअत मात्र अल्लाह तआला के लिए है तो मैं उसी से तलब करता हूँ, और यह दुआ कर रहा हूँ : ऐ अल्लाह! तू मुझे उनकी शफ़ाअत से महरूम न करना, ऐ अल्लाह! तू अपने रसूल को मेरा सिफ़ारिशी बनाना। और इस जैसी दूसरी दुआएं।

अब्दुन्नबी : हमारा इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि किसी व्यक्ति से ऐसी चीज़ मांगना जायज़ नहीं है जिसका वह मालिक न हो, और जबकि अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत अता किया है, तो आप उसके मालिक होगए, इसलिए मेरे लिए आप से शफ़ाअत तलब करना जायज़ हो गया क्योंकि आप उसके मालिक हैं, और यह शिर्क न होगा।

अब्दुल्लाह : हाँ, आप की यह बात उस समय दुरुस्त होती जब अल्लाह ने इससे रोका न होता, लेकिन अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾ (سورة الجن: ١٨)

"तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।"

और शफ़ाअत तलब करना दुआ है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिसने शफ़ाअत अता की वह अल्लाह है, और उसी अल्लाह ने तुम्हें ग़ैरों से किसी भी तरह की चीज़ तलब करने से रोका है, और एक दूसरी चीज़ यह भी है कि नबी

के सिवाय दूसरों को भी शफ़ाअत अता की गई है, चुनांचे फ़रिश्ते भी शफ़ाअत करेंगे, बालिग़ होने से पहले जो बच्चे मर गए वे भी शफ़ाअत करेंगे, औलिया भी शफ़ाअत करेंगे, तो क्या अब आप यह कहेंगे कि अल्लाह ने इन सभों को शफ़ाअत अता की है इसलिए मैं इन सभों से शफ़ाअत तलब करुंगा? यदि आप का जवाब हाँ में है, तो गोया आप नेक लोगों की इबादत की ओर पलट गए जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में की है, और यदि जवाब इन्कार में है, तो आप का यह कहना कि :– अल्लाह ने उन्हें सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शफ़ाअत अता की है, और हम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वही चीज़ मांग रहे है जो आप को दी गई है – बातिल है।

अब्दुन्नबी : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता; क्योंकि सालेहीन से इल्तिजा करना शिर्क नहीं है।

अब्दुल्लाह : क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने शिर्क को हराम क़रार दिया है,

इसे माफ़ नहीं करेगा, और इसकी हुर्मत ज़िना से भी बढ़कर है?

अब्दुन्नबी : हाँ, मैं इसे मानता हूँ और यह अल्लाह के कलाम में स्पष्ट है।

अब्दुल्लाह : अभी आप ने अपने आप से उस शिर्क का इन्कार किया है जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है, तो अल्लाह के वास्ते ज़रा आप मुझे बताएं तो सही कि वह कौनसा शिर्क है जिसे आप नहीं करते, और अपने आप से उसका इन्कार करते हैं?

अब्दुन्नबी : यह शिर्क मूरतयों की पूजा है, उनकी ओर जाना, उन से मांगना और डरना है।

अब्दुल्लाह : मूरत पूजा का अर्थ क्या है? क्या आप ऐसा गुमान रखते हैं कि कुरैश के काफ़िरों का यह अक़ीदा था कि यह लकड़ियाँ, और पत्थर पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, और जो उन्हें पुकारते हैं वे उनके कामों का इन्तिज़ाम कर देते हैं?! वे कदापि ऐसा अक़ीदा नहीं रखते थे।

अब्दुन्नबी : और मेरा भी अक़ीदा इस तरह का नहीं है, बल्कि मैं तो यह अक़ीदा रखता हूँ कि जिसने लकड़ी, या पत्थर, या क़ब्र पर बनी इमारत की ओर दुआ करने या ज़बह करने के लिए गया, और यह कहा कि यह हमें अल्लाह से क़रीब कर देंगे, और इनकी बर्कत से अल्लाह हमारी परेशानी दूर कर देगा, तो यही चीज़ें वास्तव में मूरत पूजा है।

अब्दुल्लाह : आप ने बिल्कुल ठीक कहाँ लेकिन यही सब कुछ आप क़ब्रों, उनकी जालियों और उन पर बनी इमारतों के पास करते हैं। और क्या आप ऐसा अक़ीदा रखते हैं कि शिर्क मात्र मूरतयों के साथ खास है, और सालिहीन से दुआ करना और उन पर भरोसा करना शिर्क न होगा?

अब्दुन्नबी : हाँ, मेरा मक़्सद यही है।

अब्दुल्लाह : फिर आप उन बहुत सारी आयतों के बारे में क्या कहेंगे जिन में अल्लाह ने नबियों, नेक लोगों और फ़रिश्तों का सहारा लेने को हराम

ठहराया है, और ऐसा करने वालों को काफ़िर कहा है? जैसा कि स्पष्ट रूप से पहले मैंने इसका चर्चा किया है।

अब्दुन्नबी : लेकिन जो लोग फ़रिश्तों और नबियों को पुकारते हैं, उन्हें इस पुकारने के कारण काफ़िर नहीं कहा गया, बल्कि उन्हें फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ, और ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा कहने के कारण काफ़िर कहा गया है, और हम यह नहीं कहते हैं कि अब्दुल् क़ादिर अल्लाह के बेटे हैं और न ही यह कहते हैं कि ज़ैनब अल्लाह की बेटी हैं।

अब्दुल्लाह : अल्लाह की ओर संतान की निस्बत करना मुस्तक़िल कुफ़्र है, जैसा कि उसने फ़रमायाः

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ اللَّهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ﴾ (سورة الإخلاص: ١-٣)

“ऐ नबी कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है, उसने न तो किसी को जन्म दिया है, और न ही किसी से जन्म लिया है।”

तो जिसने इन आयतों का इन्कार किया चाहे वह अन्तिम आयत का इन्कार करे या न करे तो उसने कुफ्र किया। और अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया:

﴿مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ﴾ (سورة المؤمنون: ٩١)

“न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया, और न उसके साथ और कोई मा'बूद (पूज्य) है, नहीं तो हर मा'बूद अपनी अपनी मख़्लूक़ को लिए फिरता, और हर एक दूसरे पर चढ़ दौड़ता।”

तो अल्लाह तआला ने दोनों कुफ्रों के बीच फ़र्क़ किया। और इसकी दलील यह भी है कि जिन लोगों ने लात जैसे नेक व्यक्ति से दुआ करके कुफ्र किया उन्होंने लात को अल्लाह का बेटा नहीं माना

था, और जिन्होंने जिन्नों की इबादत के द्वारा कुफ्र किया उन्होंने भी जिन्नों को बेटा नहीं कहा था, और इसी तरह चारों मज्हब में मुर्तद के हुक्म में यह चर्चा करते हैं कि जिसने अल्लाह के लिए बेटा माना वह मुरतद है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने कुफ्र किया, तो फुक़हा भी इन दोनों क़िस्मों में फ़र्क़ करते हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿أَلا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللّهِ لاَ خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلاَ هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ (سورة يونس: ٦٢)

“याद रखो! अल्लाह के दोस्तों पर न कोई डर है और न ही वह ग़मगीन होते हैं।”

अब्दुल्लाह : हम भी यही कहते हैं और यही सत्य है, लेकिन उन की इबादत नहीं की जासकती, और हम मात्र अल्लाह के साथ उनकी इबादत करने और उन्हें साझी बनाने का इन्कार करते हैं, नहीं तो उन से महब्बत करना, उनकी

पैरवी करना और उनकी करामतों को स्वीकारना सब पर वाजिब है, और उनकी करामतों का वही लोग इन्कार करते हैं जो बिद्अती हैं, अल्लाह का दीन कमी बेशी से पवित्र है, वह ऐसी हिदायत है जो दो गुम्राहियों के बीच है, और ऐसा हक़ है जो दो बातिलों के बीच है।

अब्दुन्नबी : जिन लोगों के बारे में कुर्आन उतरा वे لاإله إلا الله की गवाही नहीं देते थे, अल्लाह के रसूल को झुठलाते थे, दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करते थे, कुर्आन को झुठलाते थे, और उसे जादू कहा करते थे, और हम यह गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, कुर्आन को सच्च मानते हैं, दोबारा ज़िन्दा किए जाने पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, तो फिर हमें आप उन जैसे कैसे ठहराते हैं?

अब्दुल्लाह : लेकिन उलमा के बीच इस बारे में कोई दो राय नहीं है कि यदि किसी व्यक्ति ने कुछ

चीज़ों में अल्लाह के रसूल की तस्दीक़ की और कुछ चीज़ों में उन्हें झुठलाया तो वह काफ़िर है, वह अब तक इस्लाम में प्रवेश नहीं किया, और इसी तरह यदि किसी ने कुर्आन के कुछ हिस्से पर ईमान रखा और कुछ का इन्कार किया तो वह भी काफ़िर है, जैसे किसी ने तौहीद को तो स्वीकारा लेकिन नमाज़ का इन्कार किया, या तौहीद और नमाज़ को तो स्वीकारा लेकिन ज़कात वाजिब होने का इन्कार किया, या इन सारी चीज़ों को तो स्वीकारा लेकिन रोज़ा का इन्कार किया, या इन सारी चीज़ों को तो स्वीकारा लेकिन हज्ज का इन्कार किया, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में जब कुछ लोग हज्ज के लिए नहीं निकले तो उनके बारे में यह आयत उतरी :

﴾ وَلِلّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿

(سورة آل عمران:٩٧)

“अल्लाह तआला ने लोगों पर जो उस की ओर रास्ता पा सकते हों इस घर का हज्ज फ़र्ज़ कर

दिया है, और जो कोइ कुफ्र करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) सारी दुनिया से बे–परवाह है।'' (सूरत आल–इम्रान :97)

और यदि दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करे तो इस बात पर इज्मा'अ् (एकमत)है कि उसने कुफ़्र किया, और इसीलिए अल्लाह तआला ने अपनी किताब में इसे स्पष्ट कर दिया है कि जिसने कुछ चीज़ों पर ईमान रखा और कुछ चीज़ों का कुफ्र किया वह निःसन्देह काफ़िर है, अल्लाह तआला का आदेश है कि पूरे इस्लाम को अपनाया जाए, और जिसने कुछ चीज़ों को अपनाया और कुछ को छोड़ दिया तो उसने कुफ़्र किया, तो क्या आप इस बात को मानते हैं कि जिसने कुछ को अपनाया और कुछ को छोड़ा उसने कुफ़्र किया?

अब्दुन्नबी : हाँ, हम इसे मानते हैं, और यह तो कुर्आन में स्पष्ट है।

अब्दुल्लाह : तो जब आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने किसी चीज़ में रसूल की तस्दीक़ की, और नमाज़ के वाजिब होने का

इन्कार किया, या सारी चीज़ों को स्वीकार किया लेकिन दोबारा उठाए जाने का इन्कार किया तो वह काफ़िर है, उसकी जान और माल हलाल है, सारे मतों (मस्लकों) का इस पर इत्तिफ़ाक़ है, और कुर्आन ने इसे स्पष्ट भी कर दिया है जैसा कि ऊपर इसका चर्चा हो चुका, तो आप यह जान लीजिए कि नबी जो शरीअत लेकर आए उसमें तौहीद सब से बड़ा फ़रीज़ा है, और यह नमाज़, ज़कात और हज्ज से भी बढ़ कर है, तो भला यह कैसे हो सकता है कि इन्सान इन चीज़ों में से यदि किसी चीज़ का इन्कार करे तो वह काफ़िर हो जाए, और तौहीद जो कि सारे रसूलों का धर्म है उसे इन्कार करे तो काफ़िर न हो?! सुब्हानल्लाह! यह कितनी बड़ी जिहालत और नादानी है।

और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में ध्यान दे कर सोचो कि उन्होंने यमामा में बनू हनीफ़ा के लोगों से जिहाद किया, जबकि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में इस्लाम ले आए थे, कल्मए لا إله إلا اللّٰه محمد رسول

اللهको स्वीकार करते थे, नमाज़ पढ़ते थे और अज़ान देते थे।

अब्दुन्नबी : लेकिन वे मुसैलमा को नबी मानते थे, और हम यह कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी नहीं है।

अब्दुल्लाह : लेकिन आप लोग अली रज़ियल्लाहु अन्हु या अब्दुल् क़ादिर जीलानी रहिमहुल्लाह या नबियों या फ़रिश्तों के रुत्बे को धरती और आकाश के जब्बार के रुत्बे के बराबर पहुंचा देते हैं, जब्कि यदि किसी ने किसी व्यक्ति के रुत्बे को नबी के बराबर कर दिया तो वह काफ़िर होगया, उसकी जान और माल हलाल होगए, कल्मा और नमाज़ उसे फ़ायदा नहीं देंगे, तो जो उन्हे अल्लाह तआला के रुत्बे तक पहुँचाए वह तो अवश्य काफ़िर होगया। और इसीलिए अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें आग में जला दिया था जबकि वे इस्लाम का दावा करते थे, और वे अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों में से थे, सहाबए किराम से उन्होंने शिक्षा लिया था, लेकिन उन्होंने

अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में वही अक़ीदा रखा जो आप लोग अब्दुल् क़ादिर वगैरा के बारे में रखते हैं, फिर सारे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उन के क़त्ल और उनके काफ़िर होने पर कैसे इत्तिफ़ाक़ कर लिया? क्या आप यह समझते हैं कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मुसलमानों को काफ़िर कहा करते थे?! या आप इस भ्रम में हैं कि सैयद अब्दुल् क़ादिर जीलानी और इन जैसे लोगों के बारे में ऐसा अक़ीदा रखना हानिकारक नहीं, और अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में ऐसा अक़ीदा रखना कुफ्र है?

और यह बात भी कही जा सकती है कि पहले के लोग इसलिए काफ़िर ठहरे कि उन्होंने शिर्क के साथ-साथ, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन को झुठलाया, दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने वगैरा का इन्कार किया, तो फिर उस बात का क्या अर्थ है जिसे हर मस्लक के उलमा ने अपनी किताबों में बांधा है : (بـاب حـكـم المرتـد) "मुर्तद के हुक्म का बयान"? मुर्तद वह मुस्लिम व्यक्ति है जो इस्लाम लाने के बाद फिर काफ़िर हो

जाए, और उस बाब में बहुत सारी चीज़ों का चर्चा किया गया है जिन में से किसी भी एक को करना बन्दे को काफ़िर बना देता, और उसके खून और माल को हलाल कर देता है, यहाँ तक कि उन्होंने छोटी चीज़ों का भी चर्चा किया है, जैसा कि अल्लाह की नाराज़गी की बात को मुंह से निकालना, चाहे वह उसका अक़ीदा न रखता हो, या मज़ाक़ में उनका चर्चा करना, और इसी तरह से वे लोग भी हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने चर्चा करते हुए फ़रमाया:

﴿ قُلْ أَبِاللّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِؤُونَ
لاَ تَعْتَذِرُواْ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ﴾

(سورة التوبة:٦٥- ٦٦)

“कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी निशानियां और उसके रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक़ के लिए रह गए हैं? अब तुम बहाना न बनाओ इसलिए कि ईमान लाने के बाद अवश्य तुम काफ़िर होगए।” (सूरतुत्तौबा :65–66)

तो यह लोग जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह ईमान के बाद काफ़िर होगए, यह अल्लाह के रसूल के साथ गज़्वए तबूक में थे, और उन्होंने एक ऐसी बात कही जिसके बारे में वे कहते रहे कि हंसी मज़ाक़ में वे कहे थे।

और यहाँ उसका भी चर्चा कर देना अच्छा होगा जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने बनू इस्राईल

के बारे में किया है कि उन्होंने अपने इस्लाम, ज्ञान और तक़्वा के होते हुए भी मूसा अलैहिस्सलाम से कहा :

﴿ اجْعَل لَّنَا إِلَٰهًا ﴾ (سورة الأعراف:١٣٨)

“हमारे लिए भी एक ऐसा ही मा'बूद (पूज्य) बना दीजिए।”

और कुछ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा : “हमारे लिए जाते अन्वात बना दीजिए” तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़सम खाकर कहा कि यह तो ठीक वही बात है जो बनू इस्राईल ने कही थी :

﴿ اجْعَل لَّنَا إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ﴾ (سورة الأعراف:١٣٨)

“हमारे लिए भी एक मा'बूद (पूज्य) ऐसा ही बना दीजिए, जैसे उनके यह मा'बूद हैं।”

अब्दुन्नबी : लेकिन बनू इस्राईल और इसी तरह वह लोग जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़ाते अन्वात बनाने को कहा था इसके कारण काफ़िर नहीं हुए।

अब्दुल्लाह : इसका उत्तर यह है कि बनू इस्राईल और इस तरह जिन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़ाते अन्वात बनाने का मुतालबा किया था उन्होंने ऐसा किया नहीं, और यदि ऐसा कर लिए होते तो काफ़िर हा`जाते, और इसी तरह अल्लाह के रसूल ने जिन्हें ज़ाते अन्वात बनाने से रोका, यदि वे आप की बात न मानते और ज़ाते अन्वात बना लेते तो काफ़िर होजाते।

अब्दुन्नबी : लेकिल मेरे पास एक प्रश्न है, और वह है उसामा बिन ज़ैद का क़िस्सा कि जब

उन्होंने एक لا إله إلا اللّٰه कहने वाले व्यक्ति को क़त्ल कर दिया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर नाराज़ हुए और कहा कि : क्या उसके لا إله إلا اللّٰه कहने के बाद भी तुम ने उसे क़त्ल कर दिया? और इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़रमान : (أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُوْلُوْا : لا إله إلا اللّٰه) "मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूं यहाँ तक कि वे لا إله إلا اللّٰه कहने लगें।"

तो जो बात आप ने कही है और जो इन दोनों हदीसों में है, आप थोड़ी मेरी राहनुमाई करें कि दोनों को मैं इकट्ठा कैसे कर सकता हूँ?

अब्दुल्लाह : इस बात की जानकारी सब को है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों से जिहाद किया और उन्हें क़ैदी बनाया हालांकि वे لا إله إلا اللّٰه का इक़रार करते थे,

और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने बनू हनीफ़ा से जिहाद किया और वे भी لا إله إلا الله محمد رسول الله की गवाही दे रहे थे, और नमाज़ पढ़ रहे थे, यही हाल उनका भी था जिन्हें अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जलाया था, और आप स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने لا إله إلا الله कहने के बाद भी दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार किया उसने कुफ़्र किया और उसे क़त्ल करना जायज़ होगया। और यह भी स्वीकार करते हैं कि जिसने لا إله إلا الله कहने के बाद भी इस्लाम के किसी रुक्न का इन्कार किया तो उसने कुफ़्र किया और उसे क़त्ल किया जाएगा। तो ज़रा सोचिए किसी फरई मस्अले का इन्कार करता है तो لا إله إلا الله उसे लाभ नहीं पहुँचा सकता, तो भला जब किसी बुनियादी मस्अले का इन्कार करेगा तो لا إله إلا الله उसे कैसे फ़ाइदा देगा?! और शायद आप ने इन हदीसों का मतलब नहीं समझा।

उसामा की हदीस का अर्थ यह है कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल कर दिया जिसने इस्लाम का दावा किया यह समझ कर कि वह अपनी जान और माल की रक्षा की खातिर ऐसा कर रहा है, जबकि इस्लामी आदेश अनुसार किसी भी व्यक्ति को जो इस्लाम का दावा कर रहा है उसे क़त्ल करना हराम है यहाँ तक कि उसके ख़िलाफ़ कोई चीज़ स्पष्ट होजाए जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللّهِ فَتَبَيَّنُواْ﴾ (سورة النساء: ٩٤)

“ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में जा रहे हो तो छान बीन कर लिया करो।”

तो आयत में यह प्रमाण है कि ऐसे लोगों से हाथ रोक लेना और उनकी छान बीन करना वाजिब है, और छान बीन करने के बाद यदि इस्लाम के ख़िलाफ़ किसी चीज़ का पता चले तो उसे अल्लाह तआला के क़ौल ﴿فَتَبَيَّنُواْ﴾ की रौशनी में क़त्ल किया जाएगा, और यदि उसे

क़त्ल करना जायज़ न होता तो छान बीन करने का कोई फ़ाइदा ही न होता।

और इसी तरह दूसरी हदीस का अर्थ भी यही है कि जिसने तौहीद और इस्लाम को ज़ाहिर किया उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा, लेकिन जब उससे इस्लाम के विरुद्ध कोई चीज़ ज़ाहिर होजाए तो उसका खून हलाल होजाएग। और इसकी दलील यह है कि जिस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात कही : أَقْتَلْتَهُ بَعْدَ مَا قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّهُ؟ और यह कही : أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُوْلُوْا : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّهُ उसी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़वारिज के बारे में यह भी कहना है : فَأَيْنَمَا لَقِيْتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ "जहाँ भी तुम उन्हें पाओ उन्हें क़त्ल कर दो।"

जबकि यह ख़वारिज लोगों में सब से अधिक इबादत और तस्बीह करने वाले थे, यहाँ तक कि सहाबए किराम इन की इबादतों के सामने अपनी इबादत को हेच समझते थे, और इन्होंने सहाबए

किराम से ही इल्म सीखा था, लेकिन इसके बावजूद जब उनसे शरीअत की मुख़ालफ़त ज़ाहिर हूई तो उन्हें لاَ إِلَـٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ के कहने, अधिक इबादत करने और इस्लाम का दावा करने ने कोई फ़ाइदा नहीं पहुँचाया।

अब्दुन्नबी : क़्यामत के दिन फ़र्याद के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो हदीस साबित है कि लोग आदम के पास आएंगे, फिर नूह के पास, फिर इब्राहीम, फिर मूसा, फिर ईसा अलैहिस्सलाम के पास और वे लोग मा'ज़रत कर देंगे, तो अन्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आएंगे, तो इससे पता यह चला कि गैरुल्लाह से इस्तिग़ासा (फर्याद)करना शिर्क नहीं है।

अब्दुल्लाह : मस्अला आप पर गडमड होगया है, ज़िन्दा और मौजुद व्यक्ति से ऐसी चीज़ का फ़र्याद करना जिसकी वह शक्ति रखता हो हम इसका इन्कार नहीं करते यह तो कुर्आन में साबित है :

﴿فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِن شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ﴾ (سورة القصص: ١٥)

“उसकी क़ौम वाले ने उससे फ़र्याद की उसके ख़िलाफ़ जो उसके दुश्मनों में से था।” (सूरतुल क़सस : 15)

और जैसा कि इन्सान लड़ाई वगैरा में अपने साथियों से ऐसी चीज़ें मांगता है जिसकी वह शक्ति रखते हैं, हमने उस फ़र्याद का इन्कार किया है जो तुम इबादत के तौर पर औलिया के क़ब्रों पर या उनकी गैर हाज़िरी में करते हो, और उनसे ऐसी चीज़ें मांगते हो जिन्हें देने की शक्ति मात्र अल्लाह तआला ही को है, और लोग क्यामत के दिन नबियों से जो फ़र्याद करेंगे, इसलिए करेंगे ताकि जल्द हिसाब होने के लिए वे अल्लाह से दुआ करें, ताकि जन्नती मौक़िफ़ की परेशानियों से छुटकारा पा लें, और यह तो दुनिया और आख़िरत दोनों जगह जायज़ है कि आप किसी नेक व्यक्ति के पास आएं जो आप के साथ उठता बैठता हो, और उससे अपने लिए अल्लाह से दुआ करने की

दर्ख़ास्त करें, जैसा कि सहाबए किराम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवन में किया करते थे, लेकिन मौत के बाद उन्होंने हरगिज़ (कदापि) ऐसा नहीं किया, उन्होंने आप के क़ब्र के पास जाकर आप से सवाल नहीं किया, बल्कि सलफ़ सालिहीन ने क़ब्र के पास अल्लाह से दुआ करने से भी रोका है।

अब्दुन्नबी : आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िस्से के बारे में क्या कहेंगे जब वह आग में डाले गए तो फ़ज़ा में जिब्राईल अलैहिस्सलाम उनके पास आए, और पूछा क्या आप को मेरी कोई ज़रूरत है? तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा : हमें आप की ज़रूरत नहीं है। तो यदि किसी से फ़र्याद करना शिर्क होता तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम मदद के लिए अपने आप को कभी भी पेश न करते।

अब्दुल्लाह : यह सन्देह भी पहले वाले सन्देह की तरह ही है, और इस बारे में जिब्राईल के जिस असर का आपने उदाहरण दिया वह सहीह नहीं है, और यदि उसे सहीह भी मान लिया जाए तो

वास्तव में जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उनके सामने एक ऐसी बात रखी थी जिस की उन्हें शक्ति थी, क्योंकि अल्लाह तआला का उनके बारे में फ़रमान है :

﴿عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى﴾ (سورة النجم: ٥)

"उसे पूरी शक्ति वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।" (सूरतुन्नज्म : 5)

तो यदि अल्लाह तआला उन्हें यह आदेश दे देता कि वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग और उसके आस पास की धरती और पर्वत को पूरब या पश्चिम में कहीं लेजाकर फेंक दें तो वह ऐसा करने पर बेबस नहीं थे, और इसका उदाहरण उस धनी व्यक्ति जैसे है जो किसी ग़रीब को उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए क़र्ज़ देने की पेशकश करे, तो वह अपनी ग़रीबी पर सब्र करे और माल लेने से इन्कार करदे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़्ल से रोज़ी अ़ता करदे, जिसमें किसी का थोड़ा सा भी एह्सान न हो। तो आप इस की

बराबरी इबादत में फ़र्याद और शिर्क के साथ कैसे कर सकते हैं?!

और मेरे भाई आप इस चीज़ को अच्छी तरह समझ लीजिए कि पहले ज़माने के वे मुश्रिक़ीन जिनकी ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा गया तीन कारणों से उनका शिर्क हमारे ज़माने के मुश्रिकीन से कम्तर था :

1. पहले के मुश्रिकीन मात्र सुख के समय शिर्क किया करते थे, और दुःख के समय मात्र अल्लाह की इबादत किया करते थे, प्रमाण स्वरूप अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ﴾ (سورة العنكبوت: ٦٥)

“तो यह लोग जब नौकों पर चढ़ते हैं तो अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं, उसी के लिए इबादत को ख़ालिस करके, फिर वह जब उन्हें भूमी पर

बचा लाता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं।’’ (सूरतुल अनकबूत :65)

और दूसरी जगह फ़रमाया:

﴿وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ﴾ (سورة لقمان: ٣٢)

“और जब उन पर मौजें सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो वह खुलूस के साथ आस्था रख कर अल्लाह ही को पुकारते हैं, फिर वह जब उन्हें खुश्की की ओर बचा लाता है, तो कुछ उनमें से अपने वादे पर जमे रहते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार मात्र वही करते हैं जो वादे तोड़ने वाले और नाशुक्रे हों।” (सूरत लुक़मान :32)

तो मक्का के मुश्रिकीन जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिहाद किया, सुख के समय में अल्लाह को पुकारते थे, और उसके साथ दूसरों को भी शरीक करते थे, पर तंगी में मात्र अल्लाह

को पुकारते थे, और अपने सरदारों को भूल जाते थे, लेकिन हमारे ज़माने के मुश्रिकीन सुख और दुःख दोनों समय में ग़ैरुल्लाह को पुकारते हैं, और जब वह अधिक तंगी में होते हैं तो या रसूलल्लाह और या हुसैन इत्यादि के द्वारा दुआएं करते हैं। लेकिन कौन है जो इस वास्तविकता को समझे?

2. पहले के लोग अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को पुकारते थे जो अल्लाह के मुक़र्रबीन में से होते, या तो नबी होते, या वली, या फ़रिश्ता, या पत्थर और पेड़ जो अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि उसकी फ़र्मांबर्दारी ही करते, और हमारे ज़माने के लोग ऐसे लोगों को भी पुकारते हैं जो सबसे बड़े पापी होते।

और जो नेक लोगों को अल्लाह के साथ साझी करने का आस्था रखे, या ऐसी चीज़ों को साझी करने का आस्था रखे जो नाफ़रमानी न करती हों, तो उसका शिर्क अवश्य उनके शिर्क से कम दरजे का होगा जो अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को साझी करने का आस्था रखे स्पष्ट रूप से पापी हो।

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने के सारे मुश्रिकीन का शिर्क मात्र तौहीदे उलूहीयत (इबादत) में था, वे तौहीदे रुबूबीयत में शिर्क नहीं करते थे, बरख़िलाफ़ हमारे ज़माने के मुश्रिकीन के यह जिस तरह तौहीदे उलूहीयत में शिर्क करते हैं उसी तरह अधिकतर तौहीदे रुबीयत में भी शिर्क करते हैं, तो वह काएनात में तबीअत ;छ।ज्न्त्म्द्ध को ही मारने और जिलाने का व्यवस्थापक समझते हैं।

और शायद मैं अपनी बात को एक महत्वपुर्ण मस्अले का चर्चा करके जो ऊपर की बातों से आसानी के साथ सम्झा जासकता है ख़तम करदूँ, और वह यह है कि इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि तौहीद का आस्था दिल में होना ज़रूरी है, और बन्दा जुबान से उसे स्वीकार करे और अंगों के द्वारा उसके अनुसार अमल करे। और यदि इनमें से कोई भी एक चीज़ नहीं पाई गई तो इन्सान मुसलमान नहीं रह जाता, यदि उसने तौहीद को जान लिया लेकिन उसके अनुसार अमल नहीं किया तो वह फ़िरऔन और इब्लीस जैसे धर्म का दुश्मन और काफ़िर है। और इस बारे में अधिकतर

लोग गलती करते हैं, वे सत्य को स्वीकार करते हैं लेकिन कहते हैं कि हम इसके अनुसार अमल करने की शक्ति नहीं रखते, या कहते हैं कि हमारे देश या नगर में ऐसा करना जायज़ नहीं, और उनकी बुराई से बचने के लिए उनकी मुवाफ़क़त ज़रूरी है। लेकिन बेचारे को पता नहीं कि अधिकतर कुफ़्र के अगुवाओं को सत्य का ज्ञान था, लेकिन कोई न कोई उज़्र पैदा करके उसे छोड़ा दियां, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿اشْتَرَوْاْ بِآيَاتِ اللّهِ ثَمَنًا قَلِيلاً فَصَدُّواْ عَن سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاء مَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ﴾ (التوبة: ٩)

“उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम पर बेच दिया, और उसके रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।” (सूरतुत्तौबा :9)

और जिसने देखावे के लिए तौहीद के अनुसार अमल किया लेकिन वह उसे समझता नहीं और न ही उस को दिल से मानता है तो वह मुनाफ़िक़ है। और वह काफ़िर से भी बुरा है, इसलिए कि उसके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿إِنَّ الْمُنَـافِقِينَ فِـي الـدَّرْكِ الأَسْـفَلِ مِـنَ النَّـارِ﴾
(سورة النساء: ١٤٥)

“मुनाफ़िक़ तो अवश्य जहन्नम के सब से नीचे के दर्जे में जाएंगे”

और जब लोगों की बातों पर ध्यान देंगे तो उस समय यह मस्अला स्पष्ट होजाएगा, आप उन में से कुछ को पाएंगे कि सत्य जानते हुए भी संसार में घाटे, मर्यादा तथा राज्य के कारण उसके अनुसार अमल नहीं करते जैसे कि क़ारून, हामान और फ़िरऔन ने किया।

और कुछ को आप ऐसा भी पाएंगे कि मात्र दिखावे के लिए अमल करते हैं, अपने अक़ीदा (आस्था) के बारे में उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं।

अब आप के लिए ज़रूरी है कि आप कुर्आन की दो आयतों को ध्यान देकर समझें :

पहली आयत : वही है जिसका चर्चा ऊपर होचुका है :

﴿لاَ تَعْتَذِرُواْ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾

(سورة التوبة: ٦٦)

"तुम बहाने न बनाओ, अवश्य तुम अपने ईमान के बाद काफ़िर होगए।"

आप ने जब यह जान लिया कि जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल के साथ मिलकर रूमियों से जिहाद किया, उनमें से कुछ एक कल्मा कहने के कारण काफ़िर क़रार पाए, जिसे उन्होंने हंसी मज़ाक़ में कहा था, तो इस द्वारा आप पर यह बात स्पष्ट होगई कि जो व्यक्ति मान मर्यादा और धन सम्पत्ति में कमी होने के डर से या किसी का लिहाज़ करते हुए कुफ्र का शब्द मुख से निकालता है, या उसके अनुसार कर्म करता है, तो उसका पाप उस व्यक्ति के पाप से बढ़कर है जो कोई शब्द हंसी मज़ाक़ में बोल देता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति आम तौर से दिल में उन शब्दों पर आस्था नहीं रखता है जिसे वह लोगों को हंसाने के लिए कहता है। रहा वह व्यक्ति जो किसी डर या किसी चीज़ की

लालच में कुफ़्र के शब्द मुंह से निकालता है तो गोया कि उसने शैतान के वायदे :

﴿الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ﴾ (سورة البقرة: ٢٦٨)

"शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेहयाई का आदेश देता है।" (सूरतुल बक़रा :268)

को सत्य कर दिखाया। और उसके धमकावे :

﴿إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءهُ﴾ (سورة آل عمران: ١٧٥)

"और यह शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है।" (सूरत आल-इम्रान :175)

से डरा। और रहमान के वायदे :

﴿وَاللّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلاً﴾ (سورة البقرة: ٢٦٨)

"और अल्लाह तुम से अपनी माफ़ी और मेहर्बानी का वायदा करता है।" (सूरतुल बक़रा :268)

की तस्दीक़ नहीं की। और जब्बार की सज़ा :

﴿فَلاَ تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ (سورة آل عمران: ١٧٥)

“तो तुम उनसे न डरो मुझ से डरो यदि तुम मोमिन हो।” (सूरत आल–इम्रान :175)

से नहीं डरा। तो आप स्वंय निर्णय करें ऐसा व्यक्ति रह्मान के औलिया में से होने का हक़्दार है, या शैतान के औलिया में से होने का?

दूस्री आयत यह है :

﴿مَن كَفَرَ بِاللّهِ مِن بَعْدِ إيمَانِهِ إِلاَّ مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالإِيمَانِ وَلَكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ (سورة النحل: ١٠٦)

“जो व्यक्ति अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे, सिवाय उसके जिसे मज्बूर किया जाए और उसका दिल ईमान से मुत्मइन (संतुष्ट) हो, मगर जो लोग दिल से कुफ्र करें तो उन पर अल्लाह का

ग़ज़ब है, और उन्ही के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।” (सूरतुन्नह्ल :106)

अल्लाह तआला ने उन्हें लाचार नहीं जाना, सिवाय उन लोगों के जिन्हें विबश कर दिया गया हो, और उनका दिल ईमान से संतुष्ट हो, रहे उनके अतिरिक्त लोग तो वे अपने ईमान के बाद काफ़िर होगए, चाहे उन्होंने उसे किसी डर या लालच से किया हो या किसी का लिहाज़ रखते हुए, या अपने देश, बाल बच्चे, खान्दान, या धन से मोह के कारण किया हो, या हंसी मज़ाक़ में किया हो, या कोई और उद्देश्य रहा हो, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे विबश कर दिया गया हो, लेकिन उसका दिल संतुष्ट हो इसलिए कि दिल के आस्था पर किसी को विबश नहीं किया जासकता है। और इस आयत में:

﴿ذَلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّواْ الْحَيَاةَ الْدُّنْيَا عَلَى الآخِرَةِ وَأَنَّ اللّهَ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ﴾

(سورة النحل: ١٠٧)

“यह इसलिए कि उन्होंने दुनियावी जीवन से आख़िरत से अधिक प्रेम किया, अवश्य अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को सीधा मार्ग नहीं देखाता” (सूरतुन्नह्ल : 107)

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अज़ाब उनके आस्था, या धर्म से अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि इस कारण होगा कि उन्होंने संसारिक चीज़ों को धाख़मक चीज़ों पर तर्जीह (प्रधान्ता) दी।

अल्लाह आप को हिदायत दे, क्या इन सारे प्रमाणों को सुनने के बाद भी वह समय नहीं आया कि आप अपने पापों से तौबा करें, अल्लाह की ओर पलटें, और इन खुराफ़ात को छोड़ दें, क्योंकि जैसा कि आपने सुना मामला अधिक खतरनाक है, और इसका परिणाम बहुत ही भयंकर है।

अब्दुन्नबी : मै अल्लाह की माफ़ी चाहता हूँ, उसकी ओर पलटता हूँ, और यह गवाही दे रहा हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई भी इबादत के लायक़ नहीं है, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह के सिवाय मैं जितनी चीज़ों की इबादत करता था उन सभों का इन्कार कर रहा हूँ, और अल्लाह से दुआ कर रहा हूँ कि वह मेरे पिछले पाप को माफ़ करदे, मेरे साथ नरमी, क्षमा और रह्मत का व्यवहार करे, और अपने से मिलने तक मुझे तौहीद और सत्य आस्था पर साबित रख्खे। और उससे यह दुआ करता हूँ कि इस नसीहत पर आप को सवाब और पुण्य दे; क्योंकि धर्म नसीहत का नाम है, और आप ने मेरे नाम का जो इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब मिले, और अब मैंने अपना नाम अब्दुन्नबी से बदल कर अब्दुर्रह्मान रख लिया। और मेरे अन्दर की पोशीदः बुराई पर जो आपने इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब दे; क्योंकि यह ऐसा भ्रष्ट आस्था था कि यदि उस पर मेरी मौत होजाती तो मैं कभी सफल नहीं हो पाता।

लेकिन अन्त में मेरी आप से एक मांग है कि आप मुझे ऐसी बुराईयों से अवगत कराएं जिनके बारे में लोग गलतियों में पड़े हैं।

अब्दुल्लाह : कोई बात नहीं। आप ध्यान से सुनिए।

- किताब और सुन्नत के जिन प्रमाणों में इख़्तिलाफ़ हुआ है उन्में दंगा और तावील की ख़ातिर इख़्तिलाफ़ी चीज़ों की पैरवी से बचो, और वास्तव में उनकी जानकारी तो मात्र अल्लाह तआला ही को है। और उनके बारे में तुम्हारी भुमिका मज़्बूत इल्म वालों के भुमिका की तरह हो जो इन मुतशाबिह प्रमाणों के बारे में कहते हैं :

﴿ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ﴾ (آل عمران: ٧)

“हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की ओर से है”। (आल–इम्रान :7) और इख़्तिलाफ़ी प्रमाणों के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है : “जिनके बारे में शंका हो उन्हें छोड कर वह कर्म करो जिनके बारे में शंका न हो”। अहमद और तिरमज़ी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “जो शंका वाली चीज़ों से बचा उसने अपने धर्म और इज़्ज़त की

हिफ़ाज़त की और जो शंका वाली चीज़ों में पड़ा वह हराम में पड़ गया”। बुख़ारी और मुस्लिम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया: “पाप वह है जो तुम्हारे सीने में खटके, औ तू नापसन्द करे कि लोगों को इसकी जानकारी हो”। मुस्लिम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया: “अपने दिल से पूछो, अपने प्राण से पूछो –तीन बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा– नेकी वह है जिस पर दिल संतुष्ट हो, और पाप वह है जो दिल में लगे और सीने में खटके, अगरचे लोग तुम्हें फ़त्वा दें और फ़त्वा दें”।

❌ ख़्वाहीशात की पैरवी से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला ने इससे डराते हुए फ़रमाया:

﴿أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ﴾ (الفرقان: ٤٣)

“क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़्वाहीशात को अपना देवता बनाये हुए है”। (सूरतुल–फुरक़ान :43)

✖ लोगों की राय और बाप–दादा के आस्थाओं पर तअस्सुब करने से बचों; क्योंकि यह इन्सान और हक़ के बीच रोकावट है। बल्कि हक़ तो मोमिन का खोया हुआ सामान है, जहाँ भी पा ले वह उसका अधिक हक़्दार है। अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ﴾ (سورة البقرة: ١٧٠)

"और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुजुर्गों (बाप–दादा) को पाया, जबकि उनके बुजुर्ग बेवकूफ़ और भटके हुए हों"। (सूरतुल बक़्रा :170)

✖ काफ़िरों की छवि अपनाने से बचो, इसलिए कि यह हर मुसीबत की जड़ है, नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिसने किसी क़ौम का रूप अपनाया वह उनमें से है"। अबू–दाऊद

✖ ग़ैरुल्लाह पर भरोसा करने से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है :

وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ﴿ (سورة الطلاق: ٣)

"और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह उसके लिए काफ़ी होगा"। (सूरतुत्तलाक़ :3)

✖ अल्लाह तआला की ना–फ़रमान ी के लिए किसी भी व्यक्ति की बात न मानो, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है : "अल्लाह तआला की ना–फ़रमान ी के लिए किसी मख़्लूक़ की पैरवी जायज़ नहीं"।

✖ अल्लाह तआला के बारे में बुरा सोंचने से बचो; कयोंकि हदीसे क़ुद्सी में अल्लाह तआला का फ़रमान है : "मैं अपने सेवक के गुमान के पास होता हूँ"। बुख़ारी और मुस्लिम

- ❌ मुसीबत टालने या दूर करने के लिए कड़ा, छल्ला और धागा इत्यादि पहनने से बचो।
- ❌ बूरी नज़र से बचने के लिए ता'वीज़ लटकाने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने जो चीज़ लटकाई वह उसके सपुर्द कर दिया गया"। अहमद और तिरमज़ी
- ❌ पेड़, पत्थर, निशान और से तबर्रुक लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है।
- ❌ किसी भी चीज़ से बद्–फ़ाली लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बद्–फ़ाली लेना शिर्क है, बद्–फ़ाली लेना शिर्क है"। अहमद् और अबू दाऊद
- ❌ जादूगरों और ज्योतिशियों की पुष्टि करने से बचो जो कि इल्मे–ग़ैब का दावा करते हैं, और राशीफ़ल ज़ाहिर करते हैं, लोगों के लिए भलाई या बुराई की बाते करते हैं, इन बातों में

उनकी पुष्टि करना शिर्क है; क्योंकि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी ग़ैब नहीं जानता।

❌ बरसात बरसने की निस्बत निक्षत्रों की ओर करने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, बल्कि उसकी निस्बत अल्लाह तआला की ओर करो।

❌ गैरुल्लाह की क़सम खाने से बचो, जिसकी क़सम खाई जारही हो वह व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो; क्योंकि यह शिर्क है। हदीस शरीफ़ में आया है : "जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई उसने कुफ्र किया या शिर्क किया"। अहमद् और अबू दाऊद जैसे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़सम खाना, या अमानत, या इज़्ज़त, या जीवन इत्यादि की क़सम खाना।

❌ ज़माने को, हवा को, या सूरज, या ठंडी, या गर्मी को गाली देने से बचो; क्योंकि यह वास्तव में अल्लाह तआला को गाली देना है जिसने उन्हें बनाया है।

✖ दुःखी होने पर अगर मगर कहने से बचो; क्योंकि यह शैतान के दर्वाज़े को खोलता है, और अल्लाह की बनाई हूई तक़्दीर पर आपत्ति जताने के बराबर भी है, लेकिन यह कहा करो, अल्लाह ने इसे मुक़द्दर किया और उसे जो मन्जूर था उसने किया।

✖ क़ब्रों को मस्जिद बनाने से बचो; क्योंकि उस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी जासकती जिसमें क़ब्र हो, बुख़ारी और मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है, वह फ़र्माती हैं : अवश्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जाँकनी की अवस्था में फ़रमायाः "अल्लाह यहूदियों और ईसाइयों पर लानत करे जो उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बनाली। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्के कर्तूत से डरा रहे थे"। आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़र्माती हैं कि यदि इसका डर न होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र भी उभारी जाती। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

“तुम से पहले जो लोग थे अपने नबियों और नेक लोगों की क़ब्रों को मस्जिद बनाते थे, तो तुम क़ब्रों को मस्जिदें न बनाना, मैं तुम्हें इस से रोकता हूँ”। अबू–अवाना

✖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से और नेक लोगों से वसीला पकड़ने के बारे में उन रिवायतों की पुष्टि करने से बचो जिनकी निसबत झूटे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर करते हैं; क्योंकि यह सारी रिवायतें गढ़ी हुई हैं, इन्हीं में से यह रिवायतें भी हैं : “मेरे जाहो–जलाल के माध्यम से वसीला पकड़ों; क्योंकि अल्लाह तआला के पास मेरा मर्यादा महान है”। और यह रिवायत : “जब तुम परीशानी में पड़ो तो क़ब्र वालों का सहारा लो”। और यह रिवायत कि : “अल्लाह तआला हर वली की क़ब्र के पास एक फ़रिश्ता नियुक्त कर देता है जो लोगों की हाजतें पूरी करता है”। और यह रिवायत भी कि : “यदि तुम पत्थर के बारे में भला सोंचो

तो वह तुम्हें लाभ देगा”। इनके इलावा भी बहुत सी गढ़ी हूई झूटी रिवायतें हैं।

❌ मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, इस्रा और मे'राज और शबे–बरात इत्यादि के जश्न मनाने से बचो; क्योंकि यह सारी चीज़ें बाद की बनावटी हैं, जिनके करने की रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई दलील है, और न ही सहाब–ए–कराम ने किया है, जो कि हम से अधिक अल्लाह के रसूल से मुहब्बत करते थे, और भलाई के कामों के लिए हम से ज़्यादा हरीस थे, और यदि इन्हें करना भी भलाई का काम होता तो वे हम से पहले कर गुज़रे होते।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com